विद्यालय में नागरिक | अभ्यास और चिन्तन

अनिल औष और संजय डेनियल

आधुनिक भारत के निर्माताओं जैसे, बाबा साहेब अम्बेडकर और रवींद्रनाथ टैगोर का दृढ़ मत था कि भारत तब तक एक राष्ट्र नहीं बन सकता जब तक कि इसे ऐसा बनाया नहीं जाता। दूसरे शब्दों में, वे मानते थे कि भारत एक बनता हुआ राष्ट्र है। इस अर्थ में, राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमाओं, सेनाओं या निर्वाचित प्रतिनिधियों से नहीं, बल्कि नागरिकों से बने होते हैं : वे नागरिक जो अच्छे होते हैं और समीक्षात्मक विचारों के होते हैं, जो किसी देश में केवल पैदा नहीं होते, बल्कि बनाए जाते हैं।

कुछ संस्थाएँ जैसे परिवार, धर्म, स्कूल, समवयस्क समूह, राजनीतिक संगठन, मीडिया आदि हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। हम अक्सर नागरिकता की अवधारणा को बड़े राजनीतिक विचारों, जैसे राष्ट्रवाद, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार और चुनावों के साथ जोड़कर देखते हैं, लेकिन हम अपने परिवारों और स्कूलों के ज़िम्मेदार सदस्य बनने के बारे में भूल जाते हैं। यह लेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि विद्यालयों की कुछ प्रक्रियाएँ कैसे एक अच्छे नागरिक के गुणों को पोषित करती हैं।

बच्चे एक विकासशील नागरिक के रूप में

बल्लारी ज़िले के सरकारी विद्यालय में एक विद्यालय-संसद बनाने की प्रक्रिया अपनाई जाती है। इसमें प्रत्येक बच्चे को एक भूमिका दी जाती है ताकि वे सब, विद्यालय से सम्बन्धित मामलों पर चर्चा, बहस करने के साथ उन मामलों का निपटारा कर सकें। विद्यालयों ने अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ *आरोग्य सुरक्षा अभियान* नामक एक परियोजना पर काम किया, जिसके परिणामस्वरूप ग्राम पंचायत पुस्तकालयों के साथ मिल कर काम करने के अवसर पैदा हुए। *ओधुवा बेलाकू*, ग्रामीण विकास विभाग और पंचायतों का एक संयुक्त कार्यक्रम है। इसके अन्तर्गत ग्रामीण कर्नाटक के सार्वजनिक पुस्तकालयों में पढ़ने और सीखने के लिए सरकारी स्कूलों के बच्चों को जोड़ा गया। इससे हमें संविधान से जुड़ी सामग्री वाली किताबों को पंचायत के साथ साझा करने का मौक़ा मिला। इसके फलस्वरूप हममें से कई शिक्षक, इस अनोखे मौक़े का फ़ायदा उठाते हुए, विद्यार्थियों में नागरिकता के मूल्यों का विकास करने के लिए नई शिक्षण प्रक्रियाओं को निर्मित करने के लिए प्रोत्साहित हुए।

होसुर उच्च प्राथमिक विद्यालय, होस्पेट, के मंजप्पा नाम के शिक्षक ने एक विद्यालय-पंचायत के गठन का कार्यक्रम शुरू किया। उन्होंने विनोबा भावे क्लस्टर के विभिन्न स्कूलों के बच्चों की एक टीम बनाई और उन्हें अपने इलाके की समस्याओं, जैसे खुले नाले, रिसते हुए नल, सार्वजनिक स्थानों पर फेंके गए कचरे आदि का अवलोकन करने के लिए कहा। बच्चों ने समुदाय से यह जानकारी इकट्ठा की जिसके परिणामस्वरूप बच्चों, शिक्षकों और *पंचायत* अधिकारियों के बीच चर्चाएँ हुई। उनकी चर्चाओं ने, न केवल बच्चों को स्थानीय शासन की समझ दी बल्कि उनके परिवेश के मुद्दों की भी समझ बनाई। हर बच्चे की बात सम्मान और गरिमा के साथ सुनी गई। अधिकारियों की मदद से बच्चों ने संगठित होकर विद्यालय परिसर की सफ़ाई और रिसते हुए नलों की मरम्मत कराकर, गाँवों की समस्याओं का समाधान किया।

बच्चे एक चिन्तनशील पेशेवर (रिफ्लेक्टिव प्रैक्टिशनर) के रूप में

अम्बेडकर निम्न प्राइमरी स्कूल, कोट्टूर, कुडलिगी ब्लॉक के शिक्षक शिवकुमार और अक्कमहादेवी ने एक छोटा-सा नाटक तैयार किया। इसमें बच्चों को एक रेलवे स्टेशन और पोस्ट ऑफिस के कर्मचारियों और एक सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों के रूप में दिखाया गया। नाटक करते समय, बच्चों ने अस्पताल में स्वच्छता और साफ़-सफ़ाई के पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया। उनके अभिनय में उनका यह दृढ़ विश्वास झलक रहा था कि एक अस्पताल को लोगों की मदद करनी चाहिए।

शिक्षक इन बच्चों को स्थानीय अस्पताल और रेलवे स्टेशन ले गए और बच्चे यह देखकर चौंक गए कि वह जगहें, उतनी साफ़ नहीं थीं जितनी कि कक्षा में उन्होंने कल्पना की थी। शिक्षकों ने उन्हें ध्यानपूर्वक अवलोकन करने और इस बात पर विचार करने को कहा कि क्यों इन स्थानों को साफ़ नहीं रखा गया है। विद्यालय वापस लौटने के बाद बच्चों का जवाब था कि लोगों में इन जगहों के प्रति स्वामित्व की भावना नहीं है, उन्हें यह नहीं लगता कि अस्पताल और स्टेशन उनके अपने हैं।

इससे शिवकुमार और अक्कमहादेवी को बच्चों में विद्यालय को अपना मानने की सोच पर पहल करने में मदद मिली। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यह बात समझ आने के बाद बच्चों ने अपने विद्यालय परिसर को साफ़ रखना शुरू कर दिया।

और वयस्कों से भी कहा कि वह उनके विद्यालय परिसर में कचरा डालना बन्द करें। स्वामित्व की इस भावना ने उन्हें अपने स्कूलों का वास्तविक 'नागरिक' बना दिया।

कार्यक्षेत्र में प्रभावी होना

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा आयोजित सामाजिक विज्ञान कार्यशाला में भाग लेने के कारण, हम 'नागरिकता' की अवधारणा पर चर्चा कर पाए। नागरिकता विषय पर स्वैच्छिक शिक्षक मंच (VTF) का आयोजन किया गया। बेवूर उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक रवीन्द्र बी ने कक्षा में 'चर्चा' को अपने शिक्षणशास्त्र के रूप में चुना। छठी और सातवीं कक्षा में, नागरिकशास्त्र की पाठ्यपुस्तक से सार्वजनिक सम्पत्ति का पाठ पढ़ाते हुए उन्होंने बच्चों से कुछ सवाल पूछे, जैसे - जनता में कौन-कौन शामिल होते हैं? सार्वजनिक सम्पत्ति क्या है? करदाता कौन हैं? बच्चों ने सवालों पर चर्चा करते हुए कहा कि सभी लोग जनता हैं और जब सभी कर का भुगतान करते हैं तो सम्पत्ति भी अपने आप हर किसी की हो जाती है।

अगले दिन बच्चे शिक्षक के साथ अपने विद्यालय के क़रीब, गाँव के सार्वजनिक बस स्टैंड पर गए और उसकी सफ़ाई की। उन्होंने उपस्थित लोगों से अनुरोध किया कि चूँकि यह जनता की जगह है इसलिए इसे स्वच्छ रखें। गाँव में बेवूर उच्च प्राथमिक विद्यालय के परिसर को अपने मवेशी चराने की ज़मीन के रूप में इस्तेमाल करना आम था जिसके कारण विद्यालय परिसर के अन्दर उगने वाले पेड़-पौधे नष्ट हो जाया करते थे। पर इन सीखों के मिलने के बाद विद्यालय का समय पूरा होने के बाद भी बच्चों ने रुक कर, शिक्षक की मदद से पेड़ों की बाड़ लगाई और विद्यालय की सम्पत्ति को सुरक्षित करने के लिए फाटकों पर ताले लगा दिए। इसके बाद गाँव वालों ने विद्यालय परिसर में अपने मवेशी लाना बन्द कर दिए। *ओड़ुवा बेलाकू* कार्यक्रम के तहत इन्हीं शिक्षक ने *मक्कला ग्राम सभा* (बाल ग्राम सभा) में बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों को तैयार किया। माता-पिता को बाल-अधिकारों और परिवार में लिए गए निर्णयों में बच्चों से परामर्श के महत्त्व के बारे में समझाया। उन्होंने अभिभावकों से कहा कि वे अपने बच्चों के अनुभवों को सुनें। सभा में मौजूद अभिभावकों ने पूरे मन से सहमति जताई और इस बात पर भी सहमति जताई कि वे अपने बच्चों को बैंक, पुलिस स्टेशन और ग्राम पंचायत जैसे सार्वजनिक संस्थानों में ले जाएँगे।

निष्कर्ष

बच्चों को विचारपूर्ण ढंग से अपने अधिकारों और कर्तव्यों का प्रयोग करने में सक्षम बनाना हर शिक्षण संस्थान का व्यापक उद्देश्य होना चाहिए। हमारा मानना है कि हमारे संविधान द्वारा अधिस्थापित मूल्यों को विकसित करने के लिए, हर विद्यालय को इस तरह की गतिविधियाँ बनानी चाहिए। इससे अच्छे नागरिक बनाने की प्रक्रिया में मदद मिलेगी और एक आधुनिक, लोकतांत्रिक देश के संस्थापकों के सपने हक़ीक़त बन सकेंगे। जैसा कि परिचय में उल्लेख किया गया है, राष्ट्र अपने आप नहीं बनते उनका निर्माण करना पड़ता है और इसी तरह अच्छे नागरिक भी निर्मित करने पड़ते हैं। उन्हें जानकारी से लैस कर सशक्त बनाना और एक आधुनिक, समानुभूतिपूर्ण और उदार नागरिक बनने से जुड़े विभिन्न आयामों के बारे में शिक्षित करना, एक सरकारी विद्यालय के सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक होना चाहिए।





अनिल औष पिछले चार साल से बल्लारी ज़िले के कुडलिगी ब्लॉक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में एसोसिएट हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से एमए (विकास) की उपाधि प्राप्त की है। उन्हें पढ़ना, खाना बनाना और फ़िल्में देखना पसन्द है। उनसे anil.ausha@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।



संजय डेनियल ने पुरातत्व में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। वह 2016 में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में एसोसिएट के रूप में जुड़े। उनसे sanjaydaniel1993@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी